University Grants Commission, New Delhi Recognized Journal No. 41311
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

डॉ0 अम्बेदकर की सामाजिक एवं आर्थिक अवधारणाएँः एक अध्ययन

डॉ0 अनिल कुमार

ग्राम–बारा विशुनपुर, पो0– राजेपुर, जिला– पूर्वी चम्पारण

सार संक्षेप

डॉ अम्बेडकर के विषय में राहुल सांकृत्यायन ने कहा था कि यदि संसार में कोई ऐसा व्यक्ति है जो ज्ञान के शिखर पर पहुँचा है तो याद रखो वह डॉ अम्बेदकर है। अछूत समाज में जन्म लेकर मनुवादी हिन्दू समाज के उच्च वर्णों के अपमान, वर्णनाएँ एवं उपेक्षा की पीड़ा एवं दंश को झेलते एवं सहते हुए डॉ अम्बेदर ने उँची तालीम हासिल की और सदियों से शोषित, उत्पीड़ित, पददलित, अपने हक व अधिकारों से मरहूम दलित एंव पिछड़े समाज को अपना हमसफर बनाकर उनके हक एंव संघर्षो की लड़ाई लड़ी। उन्होने अपने जीवनकाल में ही दलितों को उनके अधिकार दिलाने में सफलता पायी। अपनी उच्चतम योग्यता के बल पर भारत का संविधान लिखा एवं सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष किया। डॉ अम्बेदकर का सामाजिक दर्शन यथार्थवादी के साथ उद्देश्यपूर्ण भी है। दलितोद्धार के लिए उन्होने परंपरागत हिन्दू सामाजिक संरचना की व्यवस्थित जाँच का कार्य आरंभ किया। डॉ अम्बेदकर की मुख्य संकल्पना थी कि अस्पृश्यता और दलितों की निर्योग्यताएँ परम्परागत हिन्दू सामाजिक संरचना की उपज है जिसका संपोषण वर्णाश्रम, कर्म एवं पुनर्जन्म पर आधारित एक व्यवस्थित एवं सशक्त हिन्दू वैचारिकी विशेष रूप से हिन्दू सामाजिक अधिशेष से होता रहा है। इसलिए उनकी मान्यता थी कि दलित समस्या का निराकरण परंपरागत हिन्दू सामाजिक संरचना में बिना मौलिक परिवर्तन किये संभव नहीं है।

डॉ अम्बेदकर पहले भारतीय थे जिन्हें किसी विदेशी विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र की डिग्री प्राप्त हुई। एक दलित के रूप में अम्बेदकर को दलितों की सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों का प्रत्यक्ष व कटु अनुभव था। उनका मानना था कि जनतंत्र की आत्मा ''एक मनुष्य एक मूल्य के सिद्धांत में निहित है। किन्तु दुर्भाग्यवश जनतंत्र ने एक मनुष्य एक वोट के सिद्धांत को अपनाया है जबकि इसें एक व्यक्ति एक मूल्य के सिद्धांत को अपनाना चाहिए। उनका मानना था कि राज्य किसी उद्यम पर प्रत्येक द्वारा बन्द किए बगैर समाज की आर्थिक व्यवस्था ऐसे करे जिससे अधिक से अधिक उत्पादन बढे और उत्पादित धन का समान वितरण हो। स्पष्ट है कि डॉ अम्बेदकर की सामाजिक एंव आर्थिक अवधारणा आज भी प्रासंगिक है।

मुख्य शब्दः अम्बेदकर, समाज, सामाजिक संरचना, अर्थ, दलित, सिद्धांत आदि।

अवधारणात्मक व्याख्या : दर्शनशास्त्र के विद्वान एंव कवि डॉ गोरख पांडेय ने दर्शन को परिभाषित करते हुए कहा था "Knowledge of reality in totality is philosophy"[1] यानि यथार्थ का संपूर्णता में ज्ञान ही दर्शन कहलाता है। दार्शनिक समाज को बिना पक्षपात किए देखता है। वह समाज की गति समझता है और समाज की प्रवृतियों को एक सौद्धांतिक जामा पहनाता है।[2] यह पूरी प्रक्रिया चिंतन की पराकाष्ठा होती है। सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलन दार्शनिकों के सिद्धांतों को आत्मसात करते हैं तथा समाज के निर्माण में जुट जाते हैं। भारतीय समाज का यथार्थ क्या है,सम्पूर्णता में इस यथार्थ का चित्र कैसा है, समाज निर्माण का दर्शन क्या है– इसकी आम भारतीय को भनक नहीं है।[3] डॉ0 अम्बेदकर भारतीय समाज के यथार्थ को सम्पूर्णता

में समझते थे जिसका उन्होंने सिद्धांतीकरण भी किया। अमेरिका से अर्थशास्त्र, राजनीति, समाजशास्त्र आदि विषयों के अध्ययन के पश्चात कुछ समय तक उन्होंने बम्बई के एक कॉलेज में अध्यापन का कार्य किया। फिर लन्दन जाकर उन्होने लंदन स्कूल ऑफ इकनामिक्स से अर्थशास्त्र में उच्च उपाधि प्राप्त की।[4] अछूतों के जीवन से उन्हें गहरी सहानुभूति थी। उनके साथ जो भेदभाव बरता जाता था उसे दूर करने के लिए उन्होने आंदोलन किया और उन्हें संगठित किया।

सामाजिक अवधारणाएँ– डॉ अम्बेदकर के अनुसार परंपरागत भारतीय समाज के पाँच आधरभूत स्तंभ है–

1. धर्म
2. जाति
3. जनजाति व्यवस्था
4. ग्राम सरकार तथा
5. संयुक्त परिवार

उपरोक्त पाँचों एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है और एक दूसरे को सुरक्षा एवं शक्ति प्रदान करते हैं। इनसे संयुक्त परिवार तथा जाति व्यवस्था अस्तित्व में आया तथा इसे युगों से अक्षुण्ण रखा गया। समाज में जाति व्यवस्था की जडें इतनी गहरी है कि इनका वैधानिक स्वरूप समाप्त हो जाने के बावजूद भी वे समाज में बनी हुई है। भारत का अनोखापन यहाँ वैचारिकी और व्यवहारिकी में सतत अन्तर्विरोध का पाया जाना है। डॉ अम्बेदकर ने अस्पृश्यता, सामाजिक प्रभेद, नारी समाज की अवनति सहित भारतीय समाज के पतन के लिए परम्परागत समाज व्यवस्था एंव शास्त्रीय नियमों को उत्तरदायी ठहराया है।[5] इनका उल्लेख अग्रलिखित रूप में किया जा सकता है।

1. वर्ण व्यवस्था – भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था सदियों से कायम है। इस व्यवस्था के अनुसार वर्णव्यवस्था के शीर्ष पर ब्राह्मण हैं जबकि सबसे निम्न स्थिति शूद्रों की है। ब्राह्मणों की उत्पत्ति परमपिता ब्रह्मा के मुख से हुई है जबकि क्षत्रियों की उत्पति ब्रह्मा के बाजू से। वैश्य ब्रह्मा की जाँघ से और शूद्र ब्रह्मा के पैर से उत्पन्न हुए हैं। उत्पति के इसी सिद्धांत के अनुसार चार वर्णों के काम भी निर्धारित कर दिए गए हैं। इस चातुर्वण व्यवस्था में कर्म की जगह जन्म को प्रधानता दी गई है। अम्बेदकर के अनुसार चतुर्वण कोई विकसित व वैज्ञानिक समाज व्यवस्था नहीं है।[6] इसकी उत्पति तब हुई जब कि मानव मस्तिष्क आदिम स्तर पर था। यह सामाजिक सुविधाओं, अनिवार्य सेवाओं और बन्धनों की एक खाका है जो जान बूझकर अधिकांश लोगों को कुछ गिने चुने लोगों की सेवाओं में लगाये रखने के लिए बनाया गया। यह सभी के विकास के विरूद्ध है। चतुवर्ण से बढकर अम्बेदकर की दृष्टि मं अपमानजनक सामाजिक व्यवस्था कोई नहीं हो सकता।[7] वर्ण व्यवस्था न केवल व्यक्ति के विकास को कुंठित करती है वरन परावलम्बन को भी बढ़ावा देती है। चतुर्वर्ण से कालांतर में जाति की उत्पति हुई जिसने भारतीय समाज में आपसी फूट और कलह को जन्म दिया जिससे भारतीय समाज पतन के गर्त में पहुँच गया।
2. जाति– भारतीय समाज में जाति व्यवस्था की जड़ें इतनी गहरी हैं कि लाख प्रयत्न करने के बाद भी इसे समाप्त नहीं किया गया है। जाति व्यवस्था का सर्वाध्कि नुकसान सामाजिक सोपान के निचले क्रम में अवस्थित जातियों को उठानी पड़ी है। निःसन्देह इस व्यवस्था के कारण शूद्र जातियेां की स्थिति काफी भयावह रही है। जाति व्यवस्था ने अस्पृश्यता को जन्म दिया है। अस्पृश्यता एक सामाजिक बुराई है जिसके कारण दलितों को असहनीय पीडा भोगनी पड़ी है। डॉ अम्बेदकर ने जाति व्यवस्था को कोई शाश्वत या ईश्वरीय नियम नहीं माना है। उनका मानना है कि यह स्वार्थी

तत्वों द्वारा जो शक्तिशाली व अधिकार संपन्न थे और दूसरों पर अपनी दासता थोपने में समर्थ थे बनाया गया नियम है।[8] जाति सामाजिक संकीर्णता और मानसिक बीमारी की सूचक है। यह सामाजिक संरचना का सबसे बडा दोष है।[9] अम्बेदकर का मानना है कि जाति व्यवस्था भारतीय समाज की एक बहुत बड़ी विकृति है जिसके दुखभाव समाज के लिए बहुत ही घातक है।

3. अस्पृश्यता का विरोध– डॉ अम्बेदकर ने अस्पृश्यता को भारतीय सामाजिक व्यवस्था का कलंक माना है। उन्होने विभिन्न ऐतिहासिक उदाहरणों से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि अस्पृश्यता के बने रहने के पीछे कोई तार्किक सामाजिक अथवा व्यावसायिक आधार नहीं है। अतः उन्होने इस व्यवस्था का जोरदार शब्दों में खंडन किया। उनका दृष्टिकोण था कि यदि हिन्दू समाज का उत्थान करना है तो अस्पृश्यता का जड से निराकरण आवश्यक है।
4. अंतर्जातीय विवाह का समर्थनः भारतीय समाज में व्याप्त जातीय बन्धनों को समाप्त करने के पक्षधर थे डॉ अम्बेदकर। उनका मानना था कि अंतर्जातीय विवाह को बढावा देकर जातीय बन्धनों से मुक्ति पायी जा सकती है। उन्होंने खुद अंतर्जातीय विवाहों तथा सहभोजों को प्रोत्साहित किया।
5. महिला उत्थान का समर्थनः भारतीय समाज में महिलाएँ सदियों से दोयम दर्जे की जिन्दगी जीने को अभिशप्त है। डॉ अम्बेदकर ने हमेशा महिला पुरूष समानता का व्यापक समर्थन किया। सशक्त समाज के निर्माण के लिए महिलाओं का विकास आवश्यक है। जब तक महिलाएँ सशक्त नहीं होगी स्वस्थ समाज अस्तित्व में नही आ सकता। इसी उद्येश्य से भारत के प्रथम विधिमंत्री रहते हुए उन्होने हिंदू कोड बिल संसद में प्रस्तुत करते समय हिन्दू महिलाओं के लिए न्याय सम्मत व्यवस्था बनाने के लिए इस विधेयक में व्यापक प्रावधान रखे। भारतीय संविधान के निर्माण समय में भी उन्होने स्त्री पुरूष समानता को संवैधानिक दर्जा प्रदान करवाने के गंभीर प्रयास किए।
6. धर्मः स्वतंत्रता, समानता और सहानुभूति के अभाव में व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्वाभाविक विकास संभव नहीं है। डॉ अम्बेदकर का मानना था कि हिंदू धर्म के सामाजिक दर्शन में इन तत्वों का नितांत अभाव है।[10] धर्म का कार्य अम्बेदकर के अनुसार व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना है। धर्म व्यक्ति के लिए होता है न कि व्यक्ति धर्म के लिए। धर्म यदि व्यक्ति का सम्मान नही करता, उसे जानवर से भी बदतर जीवन व्यतीत करने को बाध्य करता है तो वह धर्म नहीं है। एक भूखे आदमी के लिए धर्म की तुलना में रोटी अधिक महत्वपूर्ण है। धर्म जो मानवता की इज्जत नही करता वह धर्म नहीं है। अम्बेदकर का मानना था कि धर्म कभी भी अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की सिफारिश नहीं करेगा। धर्म और दासता में मेल नहीं हो सकता।
7. ब्राह्मणवादः ब्राह्मणवाद पर अम्बेदकर ने टिप्पणी करते हुए कहा था कि ब्राह्मणवाद असमानता की मानसिक प्रवृति है। ब्राह्मणवाद से मेरा आशय अम्बेदकर के शब्दों में एक समुदाय के रूप में ब्राह्मणें की शक्ति, प्रतिष्ठा और हितों से नहीं है, ब्राह्मणवाद से मेरा आशय स्वतंत्रता, समानता और मातृत्व को नकारने की शक्ति से है। डॉ अम्बेदकर ब्राह्मणवाद का पुरजोर विरोध करते थे। समाज में व्याप्त असमानता के लिए वे ब्राह्मणवाद को दोषी मानते थे।[11]

डॉ अम्बेदकर की आर्थिक अवधारणाएँ– डॉ अम्बेदकर भारत में गरीबी का कारण सामाजिक व्यवस्था को मानते थे इसलिए वे सामाजिक, आर्थिक समानता के पक्षधर थे। उन्होने संविधान में दलितों को अनुसूचित जातियें के नाम से स्थान दिलवाया तथा आर्थिक नियोजन के

उद्देश्यों में सामाजिक न्याय को जुडवाया। डॉ अम्बेदकर केन्द्रीय नियोजन की बजाय राज्यों को योजना बनाने का अधिकार देनेवाले विकेन्द्रीकृत नियोजन के समर्थक थे। उनका मानना था कि आर्थिक समाधान कभी भी सामाजिक समाधान का विकल्प नहीं बन सकते। समाजवाद मुख्यः आर्थिक समानता को अपना लक्ष्य मानता है। यही कारण है कि भारत में समाजवादी राजनीति कभी भी दलितों की मददगार नहीं बनी।[12] अम्बेदकर की आर्थिक संरचना का प्रारूप मुख्य रूप से तीन तत्वों पर आधरित है[13]

1. श्रम की स्वतंत्राता
2. राज्य समाजवाद
3. बुद्ध का साम्यवाद

1. श्रम की स्वतंत्रता– डॉ अम्बेदकर श्रम की स्वतंत्रता के हिमायती थे। वह किसी व्यक्ति की इच्छा के विरूद्ध काम करवाने के सख्त विरोधी थे। वह हड़ताल के पक्षधर थे। उनका कहना था कि हड़ताल श्रमिकों का यह अधिकार है जिसे वह किसी भी शर्त पर काम किए जाने के विरूद्ध इस्तेमाल करता है। हड़ताल के अधिकार को वह ईश्वरीय अधिकार मानते थे।

2. राज्य समाजवादः डॉ अम्बेदकर ने आर्थिक संरचना के जिस प्रारूप की परिकल्पना की है वह मुख्यतः उनके राज्य समाजवाद की धारणा पर आधारित है। राज्य समाजवाद से अम्बेदकर का आशय समाजवाद को एक कार्यक्रम के रूप में राज्य संविधान द्वारा लागू करना था न कि क्रियान्वयन के लिए उसे संसद, कार्यकारिणी अथवा जनता की इच्छा पर छोड़ना।[14] बहुसंख्यक कमजोर वर्गो के लोगों को आर्थिक शोषण से महफूज रखने के लिए निम्न विचार रखें।

1. सभी मूलभूत उद्योगों को राज्य के स्वामित्व के अंतर्गत रखना चाहिए।
2. सभी बुनियादी उद्योगों को राज्य के अधीन रहना चाहिए।
3. बीमा पर राज्य का एकाधिकार हो।
4. कृषि राज्य उद्योग हो।
5. राज्य व्यक्ति के व्यक्तिगत भूमि को उचित क्षतिपूर्ति प्रदान कर राज्यहित में ले सकता है।

3. बुद्ध का साम्यवादः अम्बेदकर ने रूसी साम्यवाद को मात्र एक धेखा माना है। बुद्ध का साम्यवाद रक्तहीन क्रांति पर आधारित है। बुद्ध का साम्यवाद ही वास्तविक साम्यवाद है जो व्यक्ति को चिंतन की स्वतंत्रता प्रदान करता है। साथ ही सम्पति संग्रह की उसकी प्रवृति पर नियंत्रण उसके सामाजिक उतरदायित्व का बोध करा सकता है। मार्क्स की आलोचना करते हुए बुद्ध इसलिए महत्वपूर्ण थे क्योंकि उन्होने जाति पर सवालिया निशान लगाते हुए समानता आधारित समाज का सपना देखा था।

डॉ अम्बेदकर का आर्थिक चिन्तन युग प्रगति का उद्घोषक है।

निष्कर्षः डॉ अम्बेदकर उन चिंतकों में से थे जिनकी लेखनी इतनी सटीक थी कि वह सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनी। डॉ अम्बेदकर इस संदर्भ में दोहरी भूमिका निभाते नजर आते है। उन्होने जो भी लिखा उसे अमलीजामा भी पहनाने का प्रयास किया। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में दलितों को दोहरी मार झेलनी पड़ी है। सामाजिक सोपान के सबसे निचले पायदान पर इन्हें जगह दी गई है। दूसरी ओर आर्थिक रूप से इन्हें पंगु बनाने का कुचक्र हजारों वर्षो से रचा गया। डॉ अम्बेदकर का संपूर्ण जीवन दलितोद्धार के लिए समर्पित रहा। भारतीय सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डाले हुए उन्होने कहा कि समाज का एक बडा तबका मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित है इसका सबसे बड़ा कारण समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था है। वर्ण व्यवस्था से जाति व्यवस्था की उत्पति हुई। वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था के कारण ब्राह्मणवाद फलता फूलता रहा। अस्पृश्यता एक कलंक है जिसने दलितों को स्थिति पशुओं के समान बना दी। डॉ अम्बेदकर का मानना था कि वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था की समाप्ति के बगैर समस्त समाज की स्थापना संभव नहीं है। जन्म पर

आधारित व्यवस्था की जगह कर्म की प्रधानता से सशक्त समाज का निर्माण संभव है।

डॉ अम्बेदकर की गिनती विश्व के उन चिंतकों में की जाती है जिन्होंने विश्व के बदलते परिवेश में विशेषकर भारतीय संदर्भ में, एक नई अर्थनीति के माध्यम से सामाजिक व आर्थिक क्रांति का उदघोष किया। अर्थजगत में उन्होने काल्पनिक आदर्शवादी सिद्धातों से कहीं ज्यादा व्यावहारिकता को महत्व दिया।

संदर्भः

1. प्रसाद चन्द्रभानः भारतीय समाज और दलित राजनीति गौतजम बुक सेन्टर, दिल्ली पृ0 सं0–55
2. वही
3. वही
4. डा शर्मा रामविलासः गॉधी, अम्बेदकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृ0 सं0–458
5. डॉ सिंह रामगोपालः भारतीय दलित समस्याएँ एवं समाधान
6. वही, पृ0 सं0– 31
7. वही पृ0 सं0– 32
8. वही पृ0 सं0–33
9- www.essaysinhindi. Com
10. डॉ सिंह रामगोपालः भारतीय दलित समस्याएँ एवं समाधान मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ0 सं0– 34
11. वही पृ0 सं0 35
12. http//omprakashkashyap.wordpress.com
13. डॉ सिह रामगोपालः भारतीय दलित समस्याएँ एंव समाधान मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, गोपाल, पृ0 सं0–44
14. वही पृ0 सं0–45